अनंत चतुर्दशी व्रत महत्व व पूजा विधि एवं कथा

Anant Chaturdasi Varth mahatv /Pooja Vidhi katha

अनंत चतुर्दशी व्रत कब और कैसे - अनंत चतुर्दशी के दिन भगवान श्री हरि की पूजा की जाती है । यह व्रत भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को किया जाता है ।
इस व्रत में सूत या रेशम के धागे को लाल कुंकुम से रंग, उसमें चौदह गांठे (14 गांठे भगवान श्री हरि के द्वारा 14 लोकों की प्रतीक मानी गई है) लगाकर राखी के तरह का अनंत बनाया जाता है । इस अनंत रूपी धागे को पूजा में भगवान पर चढ़ा कर व्रती अपने बाजु में बाँधते हैं ।
पुरुष दाएं तथा स्त्रियां बाएं हाथ में अनंत बाँधती है । ऐसी मान्यता है कि यह अनंत हम पर आने वाले सब संकटों से रक्षा करता है। यह अनंत डोरा भगवान विष्णु को प्रसन्न करने वाला तथा अनंत फल देने वाला माना गया है।यह व्रत धन पुत्रादि की कामना से किया जाता है। इस दिन नए डोरे के अनंत को धारण करके पुराने का विसर्जन किया जाता है । अग्नि पुराण के अनुसार व्रत करनेवाले को एक सेर आटे की मालपुआ अथवा पूड़ी बनाकर पूजा करनी चाहिये तथा उसमें से आधी ब्राहमण को दान दे दें और शेष को प्रसाद के रूप में बंधु-बाँधवों के साथ ग्रहण करें । इस व्रत में नमक का उपयोग निषेध बताया गया है ।
ऐसी मान्यता है कि यदि किसी व्यक्ति को अनंत रास्ते में पड़ा मिल जाये तो उसे भगवान की इच्छा समझ कर, अनंत व्रत तथा पूजन करना चाहिये ।
यह व्रत पुरुषों और स्त्रियों के समस्त पापों को नष्ट करने वाला माना गया है ।
इस व्रत के प्रभाव से ही पाण्डवों ने अपने भाईयों सहित महाभारत का युद्ध जीत अपना खोया हुआ साम्राज्य तथा मान सम्मान पाया ।

अनंत चतुर्दशी व्रत पूजन सामग्री :- Anant Chaturdashi Vrat Pujan Samagri:-

इस पूजा में यमुना (नदी), शेष (नाग) तथा अनंत (श्री हरि) की पूजा की जाती है । इस में कलश को यमुना के प्रतीक के रूप में, दूर्बा को शेष का प्रतीक तथा 14 गांठों वाले अनंत धागे को भगवान श्री हरि के प्रतीक के रूप में पूजा की जाती है । इस में फूल, पत्ती, नैवैद्य सभी सामग्री को 14 के गुणक के रूप में उपयोग किया जाता है । ऐसा कहा जाता है कि यदि यह व्रत 14 वर्षों तक किया जाए, तो व्रती विष्णु लोक की प्राप्ति करता है।

पत्ते – 14 प्रकार के वृक्षों के

कलश (मिट्टी का)- एक

कलश पात्र (मिट्टी का)- एक

दूर्बा

चावल – **250**ग्राम

कपूर- एक पैकेट

धूप - एक पैकेट

पुष्पों की माला – चार

फल – सामर्थ्यानुसार

पुष्प (**14** प्रकार के)

अंग वस्त्र –एक

नैवैद्य(मालपुआ)

मिष्ठान्न - सामर्थ्यानुसार

अनंत सूत्र (**14** गाँठों वाले) – नये

अनंत सूत्र (**14** गाँठों वाले) – पुराने

यज्ञोपवीत(जनेऊ) – एक जोड़ा

वस्त्र

तुलसी दल

पान- पाँच

सुपारी- पाँच

लौंग – एक पैकेट

इलायची - एक पैकेट

पंचामृत(दूध**,**दही**,**घृत**,**शहद**,**शक्कर)

शेषनाग पर लेटे हुए श्री हरि की मूर्ति अथवा तस्वीर

आसन (कम्बल)

अनंत चतुर्दशी व्रत पूजन विधि आरम्भ:-

पुराणों मे इस व्रत को करने का विधान नदी या सरोवर पर उत्तम माना गया है । परंतु आज के आधुनिक युग में यह सम्भव नहीं है । अत: घर में ही पूजा स्थान पर शुद्धिकरण करके अनंत भगवान की पूजा करें तथा कथा सुने । साधक प्रात: काल स्नानादि कर नित्यकर्मों से निवृत हो जायें । सभी सामग्री को एकत्रित कर लें तथा पूजा स्थान को पवित्र कर लें। पत्नी सहित आसन पर बैठ जायें ।

अनंत चतुर्दशी पूजन विधि -

पुराणों मे इस व्रत को करने का विधान नदी या सरोवर पर उत्तम माना गया है। परंतु आज के आधुनिक युग में यह सम्भव नहीं है। अत: घर में ही पूजा स्थान पर शुद्धिकरण करके अनंत भगवान की पूजा करें तथा कथा सुने। साधक प्रात: काल स्नानादि कर नित्यकर्मों से निवृत हो जायें। सभी सामग्री को एकत्रित कर लें तथा पूजा स्थान को पवित्र कर लें। पत्नी सहित आसन पर बैठ जायें।

पवित्रीकरण-

अब दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न पवित्रीकरण मंत्र का उच्चारण करें और सभी सामग्री , उपस्थित जन- समूह पर उस जल का छिंटा दें कर सभी को पवित्र कर लें ।

पवित्रीकरण मंत्र -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्व अवस्थांगत: अपिवा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्य अभ्यन्तर: शुचिः॥

आचमन

दाएँ हाथ में जल लें निम्न आचमन मंत्र के द्वारा तीन बार आचमन करें

"ॐ केशवाय नमः" मंत्र का उच्चारण करते हुए जल को पी लें।

"ॐ नारायणाय नमः" मंत्र का उच्चारण करते हुए जल को पी लें।

"ॐ वासुदेवाय नमः" मंत्र का उच्चारण करते हुए जल को पी लें।

तत्पश्चात"ॐ हृषिकेशाय नमः" कहते हुए दाएँ हाथ के अंगूठे के मूल से होंठों को दो बार पोंछकर हाथों को धो लें।

पवित्री धारण

तत्पश्चात् निम्न मंत्र के द्वारा कुश निर्मित पवित्री धारण करे

पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ।।

स्वस्तिवाचन -

हाथ में अक्षत तथा पुष्प लें और निम्न मंत्रों को बोलते हुए थोड़ा -थोड़ा पुष्प भूमि पर छोड़ते जायें ।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नम : ।

ॐ केशवाय नम : ।

ॐ नारायणणाय नम : ।

ॐ माधवाय नम : ।

ॐ गोविंदाय नम : ।

ॐ विष्णवे नम : ।

ॐ मधुसूदनाय नम : ।

ॐ त्रिविक्रमाय नम : ।

ॐ वामनाय नम : ।

ॐ श्रीराधाय नम : ।

ॐ हृषीकेशाय नम : ।

ॐ पद्मनाभाय नम : ।

ॐ दामोदराय नम : ।

ॐ संकर्षणाय नम : ।

ॐ वासुदेवाय नम : ।

ॐ प्रद्युम्नाय नम : ।

ॐ अनिरुद्धाय नम : ।

ॐ पुरुषोत्तमाय नम : ।

ॐ अधोक्षजाय नम : ।

ॐ नरसिंहाय नम : ।

ॐ अच्युताय नम : ।

ॐ जनार्दनाय नम : ।

ॐ उपेंद्राय नम : ।

ॐ हरये नम : ।

ॐ श्रीकृष्णाय नम : ।

ॐ श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नम : ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम : ।

शचीपुरन्दराभ्यां नम : ।

मातृपितृभ्यां नम : ।

इष्टदेवताभ्यो नम : ।

ग्रामदेवताभ्यो नम : ।

स्थानदेवताभ्यो नम : ।

वास्तुदेवताभ्यो नम : ।

सर्वेभ्यो देवेभ्यो नम : ।

सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नम : ।

संकल्प : -

हाथ मे अक्षत ,पान का पत्ता ,सुपारी तथा सामर्थ्यानुसार सिक्के लेकर संकल्प मंत्र उच्चारित करते हुए संकल्प करें -

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु: श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य ॐ विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्द्धे विष्नुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे, कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बुद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अमुकक्षेत्रे (अपने नगर तथा क्षेत्र का नाम लें) बौद्धावतारे अमुकनाम संवत्सरे श्रीसुर्ये अमुकयाने अमुक ऋतो(ऋतु का नाम लें) महामंगल्यप्रदे मासानां मासोत्तमे भाद्र मासे शुक्ल पक्षे चतुर्दशी तिथौ अमुक वासरे (वार का नाम लें) अमुक नक्षत्रे (नक्षत्र का नाम लें) अमुक योगे अमुक-करणे अमुकराशिस्थिते चंद्रे (जिस राशि में चंद्रमा स्थित हो,उसका नाम लें) अमुकराशिस्थिते श्रीसुर्ये (जिस राशि में सुर्य स्थित हो,उसका नाम लें) देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा- राशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह-गुणग़ण-विशेषण- विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक गोत्र (अपने गोत्र का नाम लें) अमुकनाम (अपना नाम ले) ऽहं मम सकुटुम्बस्य क्षेमैश्वर्यायुरारोग्यचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं मया आचरितं वा आचार्यमाणस्य व्रतस्य सम्पूर्णफलावाप्त्यर्थं श्रीमदनन्तपूजनमहंकरिष्ये। श्रीमदनन्तव्रतांगत्वेन गणेशपूजनं ,यमुनापूजनादिकं च करिष्ये।

गौरी-गणेश पूजन:-

अब अक्षत, पुष्प एवं रोली लेकर गौरी-गणेश का पूजन ध्यान करें

एकदन्तं शूर्पकर्णं गज्वक्त्रं चतुर्भुजम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिं विनायकम्।
हेमाद्रि तनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीम् आवाहयामि अहम्।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः

अक्षत, पुष्प, रोली गौरी - गणेश पर चढ़ायें ।

कलश पूजन

कलश में शुद्ध जल भर लें और उसमें थोड़ा गंगाजल मिला लें। भूमि पर चावल अथवा रोली से अष्टदल निर्मित करें और उस पर कलश की स्थापना करें। अब अक्षत, पुष्प लेकर निम्न मंत्रो द्वरा कलश का ध्यान करें।

नमो नमस्ते स्फिटक प्रभाय
सुश्वेत हाराय सुमंगलाय ।
सुपाश हस्ताया झाषासनाय
जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥
"ॐ अपां पतये वरुणाये नमः ।"

कलश पर पुष्प एवं अक्षत छोड़ें।

शंख पूजन

निम्न मंत्रो से शंख का पूजन करते हुए उस पर पुष्प एवं अक्षत छोड़ें।

ॐ ह्रीं श्रीं नमश्रीधरकरस्थाय पयोनिधिजातायं :

लक्ष्मीसहोदराय फलप्रदाय फलप्रदाय

श्री शंखाय श्रीं ह्रीं नम।:

यमुना जी का ध्यान

अब दोनों हाथ जोड़कर निम्न मंत्रो से यमुना जी का ध्यान करें :-

सरस्वति ! नमस्तुभ्यं सर्वकामप्रदायिनि ।

आगच्छ देवि यमुने व्रतसम्पूर्तिहेतवे।

अंग पूजन कलश :-

हाथ में अक्षत लेकर थोड़-थोड़ा अक्षत कलश पर छोड़ते हुए निम्न मन्त्र उच्चारित करें -

अथाङ्गपजा मंत्र

श्रीचञ्चलायै नमः पादौ पूजयामि

श्रीचपलायै नमः जानुनी पूजयामि

श्रीभवह्रत्यै नमः कटिं पूजयामि

श्रीहराय नमः नाभिं पूजयामि

श्रीमन्मथवासिन्यै नमः गुह्यं पूजयामि

श्रीज्ञातवासिन्यै नमः ह्रदयं पूजयामि

श्रीभद्रायै नमः स्तनौ पूजयामि

श्रीअघहन्त्र्यै नमः भुजौ पूजयामि

श्रीरक्तकण्ठायै नमः कण्ठं पूजयामि

श्रीभवह्रत्यै नमः मुखं पूजयामि

श्रीगौर्यै नमः नेत्रं पूजयामि

श्रीभागीरथ्यै नमः ललाटं पूजयामि

श्रीयमुनायै नमः शिरः पूजयामि

श्रीसरस्वत्यै नमः सर्वांग पूजयामि।

नाम मंत्र पूजन कलश :-

हाथ में अक्षत तथा पुष्प लेकर एक -एक मंत्र पढ़ते हुए थोड़ा-थोड़ा अक्षत और पुष्प कलश पर चढ़ायें।

श्रीयमुनायै नमः, श्रीसीतायै नमः, श्रीनर्मदायै नमः, श्रीउत्पलायै नमः, श्रीअभीष्टप्रदायै नमः, श्रीधात्र्यै नमः, श्रीहरिरूपिण्यै नमः, श्रीगंगायै नमः, श्रीगौर्य्यै नमः, श्रीभागीरथ्यै नमः, श्रीतुङ्गायै नमः, श्रीभद्रायै नमः, श्रीकृष्णावेण्यै नमः, श्रीभवनाशिन्यै नमः, श्रीसरस्वत्यै नमः, श्रीकावेर्यै नमः, श्रीसिन्धवे नमः, श्रीगौतम्यै नमः, श्रीगायत्र्यै नमः, श्रीगरुड़ायै नमः, श्रीगिरिजायैयै नमः, श्रीचन्द्रचूड़ायै नमः, श्रीसर्वेश्वर्यै नमः, श्रीमहालक्ष्म्यै नमः॥

श्रीसर्वपापहरे देवि सर्वोपद्रवनाशिनि। सर्वसम्पत्प्रदे देवि यमुनायैनमोऽस्तु ते॥

प्रार्थना

अब धूप,दीप,नैवेद्य,ताम्बूल आदि कलश पर समर्पित करें और दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें ।

सुराऽसुरेन्द्रादि-किरिटमौक्तिकैर्युक्तं सदा यत्तव-पादपंकजम्।
परापरं पातु वरं सुमंगलं नमामि भक्त्या तव कार्यसिद्धये ॥
भवानि च महालक्ष्मि सर्वकामप्रदायिनि।
व्रतं सम्पूर्णतां यातु यमुनायै नमोऽस्तु ते।

अनन्त भगवान की स्थापना-

यमुना कलश पर पूर्णपात्र (मिट्टी का हो जिसमें अष्टदल बना हो) स्थापित कर उस पर सात फणयुक्त दूर्बा से निर्मित शेषजी (नाग देवता) स्थापित करें तथा उसपर अनन्त भगवान (शेषनाग पर सोये हुए) की तस्वीर अथवा मूर्ति रखें ।
इसी पर 14 गाँठोंवाला अनंत भी रखें । अब हाथ में पुष्प लेकर अनंत भगवान का ध्यान तथा आवाहन करें ।

ब्रह्माण्डाधारभूतं च यमुनान्तरवासिनम्। फणासप्तसमायुक्तं ध्यायेऽनन्तं हरिप्रियम्॥

शेषं सप्तफणायुक्तं कालपन्नगनायकम्। अनन्तशयनार्थं त्वां भक्त्या ह्यावाहयाम्यहम्॥

पाद्यादिपूजन-

अब पाद्यादिपूजन करें

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां स्नानीय, पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥

एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि समर्पयामि। अनंतभ्यां नमः।

अंग पूजा-

हाथ में अक्षत तथा पुष्प लेकर मंत्र पढ़ते हुए थोड़ा- थोड़ा अक्षत और पुष्प चढ़ायें और अंग पूजा करें –

सहस्त्रपादाय नमः पादौ पूजयामि ।
गूढ़गुल्फाय नमः गूढ़गुल्फौ पूजयामि।
हेमजंघायै नमः जंघे पूजयामि।
मन्दगतये नमः जानुनी पूजयामि।
पीताम्बरधराय नमः कटिं पूजयामि।
गम्भीरनाभाय नमः नाभिं पूजयामि।
पवनाशनाय नमः उदरं पूजयामि।
उरगाय नमः हस्तौ पूजयामि
कालियात्मने नमः भुजौ पूजयामि
कम्बुकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि
विषवक्त्राय नमः वक्त्रं पूजयामि
फणाभूषणाय नमः ललाटं पूजयामि
लक्ष्मणाय नमः शिरः पूजयामि
अनन्तप्रियाय नमः सर्वांग पूजयामि।

पंचोपचार पूजन तथा प्रार्थना -

अक्षत तथा पुष्प चढ़ायें,धूप-दीप दिखायें और नैवद्य समर्पित कर पञ्चोपचार विधि से पूजन कर प्रार्थना करें -

अनन्तकल्पोक्तफलं देहि मे त्वं महीधर ।

त्वत्पूजारहितश्चार्धं फलं प्राप्नोति मानव:।

द्वार पूजा :-

इसके बाद मण्डपस्थ चारों द्वारों पर निम्न मंत्रोंसे पूजन करें :-

गृहद्वारे-

द्वारश्रियै नम: ।

नन्दायै नम: ।

सुनन्दायै नम: ।

धात्र्यै नम: ।

विद्यायै नम: ।

शिवशक्तयै नम: ।

मायाशक्तयै नम: ।

शंखनिधये नम: ।

पद्मनिधये नम: ।

उत्तरद्वारे-

द्वारश्रियै नम: ।

बलायै नम: ।

प्रबलायै नम: ।

धात्र्यै नम: ।

विद्यायै नम: ।

शिवशक्तयै नम: ।

मायाशक्तयै नम: ।

शंखनिधये नम: ।

पद्मनिधये नम: ।

पश्चिमद्वारे-

द्वारश्रियै नमः ।

महाबलायै नमः ।

प्रबलायै नमः ।

धात्र्यै नमः ।

विधात्र्यै नमः ।

मायाशक्तयै नमः ।

शंखनिधये नमः ।

पद्मनिधये नमः ।

पीठमध्ये -

वास्तुपुरुषाय नमः ।

मण्डूकाय नमः ।

कामाग्निरुद्राय नमः ।

आधारशक्तयै नमः ।

कूर्माय नमः ।

पृथिव्यै नमः ।

अमृतार्णवाय नमः ।

श्वेतद्वीपाय नमः ।

कल्पवृक्षेभ्यो नमः ।

मणिमन्दिराय नमः ।

हेमपीठाय नमः ।

धर्माय नमः ।

अधर्माय नमः ।

ज्ञानाय नमः ।

वैराग्याय नमः ।

ऐश्वर्याय नमः ।

अनैश्वर्याय नमः ।

सहस्त्रफणान्विताय नमः ।

अनन्ताय नमः ।

पद्माय नमः ।

आनन्दकन्दाय नमः ।

विकारमयकेसरेभ्यो नमः ।

प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ।

सूर्यमण्डलाय नमः ।

चंद्रमण्डलाय नमः ।

वह्निमण्डलाय नमः ।

सं सत्याय नमः ।

रं रजसे नमः ।

तं तमसे नमः ।

आत्मने नमः ।

परमात्मने नमः ।

ज्ञानात्मने नमः ।

प्राणात्मने नमः ।

कालात्मने नमः ।

विद्यात्मने नमः ।

ततः - पूर्वादिदिक्षु-

जयायै नमः ।

विजयायै नमः ।

अजितायै नमः ।

अपराजितायै नमः ।

नित्यायै नमः ।

विनाशिन्यै नमः ।

दोग्ध्रयै नमः ।

अघोरायै नमः ।

मंगलायै नमः ।

अपारशक्तिकमलासनायै नमः ।

प्राणप्रतिष्ठा :-

भगवान श्री अनन्तदेव की मूर्ति अथवा तस्वीर व चौदह गाँठों वाले धागे की प्राण प्रतिष्ठा करें।

हाथ में अक्षत लेकर दोनों हाथ जोड़े तथा मंत्र उच्चारित करें :-

अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषय: ऋग्यजु:सामच्छन्दांसि,

प्राणदेवता, ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिं, क्रौं कीलं, श्रीप्राणप्रतिष्ठापने विनियोग:। ॐ आं

ह्रीं क्रीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं आं प्राणा इह प्राणा: । ॐ आं ह्रीं० जीव इह

स्थित:। ॐ आं ह्रीं क्रीं अं० सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्-

चक्षुश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपायूपस्थेतीहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।। ॐ अस्यै

प्राणा: प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा: क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

अक्षत को मूर्ति और अनंत पर छोड़ दें ।

ध्यान मंत्र :-

हाथ में पुष्प लेकर भगवान का ध्यान करें ।

रक्ताम्भोधिस्थ-पातोल्लसदरुणसरोजांघ्रि-रूढ़ाकराब्जै:,

पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथमगुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान्।

विभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरूहाढ़्या,

देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्ति: परा न:।।

पुष्प भगवान को समर्पित करें

प्रधानदेवता पूजन-

दोनों हाथ जोड़कर भगवान श्री हरि का ध्यान करें

नवाम्रपल्लवाभासं पिंगलमश्रुलोचनम्।
पीताम्बर्धरं देवं शंखचक्रगदाधरम्।
अलङ्कृतं समुद्रस्थं विश्वरूपं विचिन्तये॥

आवाहन करे-

दोनों हाथ जोड़कर भगवान श्री हरि का आवाहन करें :-

आगच्छानन्ता देवेश तेजोराशे जगत्पते।
इमां मया कृतां पूजां गृहाण पुरुषोत्तम॥

आसन दे :-

कोई वस्त्र अथवा मौली हाथ में लेकर भगवान श्री हरि को आसन दें -

नानारत्नसमायुक्तं कार्तस्वरविभूषितम्।
आसनं देवदेवेश गृहाण पुरुषोत्तम ॥

पादय-

जल पात्र से जल लेकर पादय धुलने के लिये जल समर्पित करें -

गंगादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुस्पर्शं च पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

अर्घ्य दें

जल पात्र से जल लेकर भगवान का अभिषेक करें

अनन्तानन्त देवेश अनन्तफल्दायक ।

अनन्तानन्तरूपोऽसि गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥

आचमन (जल) दें -

जल पात्र से जल लेकर हाथ धुलने के लिये जल समर्पित करें

गंगोदकं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम्।

आचम्यतां हृषीकेश प्रसीद पुरुषोत्तम ॥

स्नान करावे -

जल पात्र से जल लेकर स्नान के लिये जल समर्पित करें -

अनन्तगुणरूपाय विश्वरूपधराय च ।

नमो महात्मदेवाय अनन्ताय नमो नमः॥

स्नान विधि -

दुग्ध ,दधि, घृत , मधु,शर्करा से बारी बारी से भगवान को पञ्चामृत स्नान करायें और अंत में शुद्ध जल से स्नान करायें ।

दुग्ध स्नान मंत्र

सुरभेस्तु समुत्पन्नं देवानामपि दुर्लभम्।
पयो ददामि देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम ॥

दधि स्नान मंत्र

चंद्रमण्डलसंकाशं सर्वदेवप्रियं हि यत्।
ददामि दधि देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम॥

घृत स्नान मंत्र

आज्यं सुराणामाहारम् आज्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।
आज्यं यज्ञे पवित्रं परमं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम॥

मधु स्नान मंत्र

सर्वौषधिसमुत्पन्नं पीयुषसदृशं मधु ।
स्नानय ते मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

शर्करा स्नान मंत्र

इक्षुदण्डात्समुद्भूतां शर्करा मधुरां शुभम्।
स्नानय ते मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

शुद्धोदक स्नान मंत्र

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदे सिंधु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम ॥

वस्त्रम्

भगवान को मंत्र के साथ वस्त्र समर्पित करें :-

तप्तकाञ्चनवर्णाभं कौशेयञ्च सुनिर्मितम्।
वस्त्रं गृहाण देवो लक्ष्मीयुक्तं नमोऽस्तु ते॥

उपवस्त्रम् :-

भगवान को मंत्र के साथ उपवस्त्र/मौली समर्पित करें -

दामोदर नमस्तेऽस्तु त्राहि मां भवसागरात्।
ब्रह्मसूत्रं सोतारीयं गृहाण पुरुषोत्तम ॥

यज्ञोपवीत

भगवान को मंत्र के साथ यज्ञोपवीत समर्पित करें -

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

चंदनम् :-

भगवान को मंत्र के साथ चंदन समर्पित करें

श्रीखण्ड चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।
विलोपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

अक्षतम् :-

हाथ में अक्षत लेकर मंत्रों द्वार अक्षत समर्पित करें

अक्षताश्चसुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

पुष्प माला-

हाथ में माला ले और भगवान को चढ़ाये-

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ग्रंथि पूजा-

तत्पश्चात हाथ में अक्षत लेकर ग्रंथि पूजा करें और मंत्र के साथ अक्षत छोड़ते जायें

श्रियै नमः। मोहिन्यै नमः। पद्मिन्यै नमः। महाबलायै नमः। अजायै नमः। वरदायिन्यै नमः। शुभायै नमः। जयायै नमः। विजयायै नमः। पापनाशिन्यै नमः। विश्वरूपायै नमः। सर्वमंगलायै नमः।

अंग पूजा :-

हाथ में अक्षत लेकर अंग पूजा के मंत्र के साथ अक्षत छोड़ते जायें

मत्स्याय नमः पादौ पूजयामि। कूर्माय नमः गुल्फौ पूजयामि। वराहाय नमः जानुनी पूजयामि।
नरसिंहाय नमः ऊरू पूजयामि। रामाय नमः उदरं पूजयामि। श्रीरामाय नमः हृदयं पूजयामि।
कृष्णाय नमः मुखं पूजयामि। सहस्त्रशिरसे नमः सिरः पूजयामि।
श्रीमदनन्ताय नमः सर्वांग पूजयामि।

पत्र पूजा

अलग-अलग 14 पत्तियों से पत्र पूजा करें

कृष्णाय नमः पलासपत्रं समर्पयामि।

विष्णवे नमः औटुम्बरपत्रं समर्पयामि।

हरये नमः अश्वत्थपत्रं समर्पयामि।

शम्भवे नमः भृंगराजपत्रं समर्पयामि।

ब्रह्मणे नमः जटाधरायपत्रं समर्पयामि।

भास्कराय नमः अशोकपत्रं समर्पयामि।

शेषाय नमः कपित्थपत्रं समर्पयामि।

सर्वव्यापिने नमः वटपत्रं समर्पयामि।

ईश्वराय नमः आम्रपत्रं समर्पयामि।

विश्वरूपिणे नमः कदलीपत्रं समर्पयामि।

महाकालाय नमः अपामार्गपत्रं समर्पयामि।

सृष्टिकर्न्ने नमः करवीरपत्रं समर्पयामि।

स्थितकर्न्ने नमः पुन्नागपत्रं समर्पयामि।

अनन्ताय नमः नागवल्लीपत्रं समर्पयामि।

पुष्प पूजा :-

14 प्रकार के पुष्प से पुष्प पूजा करें

अनन्ताय नमः पद्मपुष्पं समर्पयामि।

विष्णवे नमः जातिपुष्पं समर्पयामि।

केशवाय नमः चम्पकपुष्पं समर्पयामि।

अव्यक्ताय नमः कह्लारपुष्पं समर्पयामि।

सहस्त्रजिते नमः केतकीपुष्पं समर्पयामि।

अनन्तरूपिणे नमः बकुलपुष्पं समर्पयामि।

विशिष्टाय नमः पुन्नागपुष्पं समर्पयामि।

शिष्टेष्टाय नमः करवीरपुष्पं समर्पयामि।

शिखिण्डने नमः धतूरपुष्पं समर्पयामि।

नहुषाय नमः कुंदपुष्पं समर्पयामि।

विश्वबाहवे नमः मल्लिकापुष्पं समर्पयामि।

महीधराय नमः मालतीपुष्पं समर्पयामि।

अच्युताय नमः गिरिकर्णीकापुष्पं समर्पयामि।

अनन्ताय नमः पुष्पं समर्पयामि।

भगवान के अष्टोत्तरशत (108) नामों से पूजा करें :-

हाथ में अक्षत और पुष्प लें तथा एक-एक नाम को बोलते हुए श्रीअनंत भगवान को अक्षत समर्पित करें -

1. अन्न्ताय नम: ।
2. अच्युताय नम: ।
3. अद्‌भूतकर्मणे नम: ।
4. अमितविक्रमाय नम: ।
5. अपराजिताय नम: ।
6. अखण्डाय नम: ।
7. अग्निनेत्राय नम: ।
8. अग्निवपुष्पे नम: ।
9. अदृश्याय नम: ।
10. अत्रिपुत्राय नम: ।
11. अनुकूलाय नम: ।
12. अमृताशने नम: ।
13. अनघाय नम: ।
14. अप्सुनिलयाय नम: ।
15. अहराय नम: ।
16. अष्टमूर्तये नम: ।
17. अनिरुद्‌धाये नम: ।
18. अनिविष्टाय नम: ।
19. अचञ्चलाय नम: ।
20. अब्दादिकाय नम: ।
21. अचलरूपाय नम: ।
22. अखिलाधाराय नम: ।

23. अव्यक्ताय नमः ।

24. अनुरूपाय नमः ।

25. अभयंकराय नमः ।

26. अक्षताय नमः ।

27. अवपुषे नमः ।

28. अयोनिजाय नमः ।

29. अरविन्दाक्षाय नमः ।

30. अशनवर्जिताय नमः ।

31. अधोक्षजाय नमः ।

32. अदितिपुरुषाय नमः ।

33. अम्बिकापतिपूजिताय नमः ।

34. अपस्मारनाशिने नमः ।

35. न्यायाय नमः ।

36. अनादिने नमः ।

37. अप्रमेयाय नमः ।

38. अघशत्रये नमः ।

39. अमरारिघ्नाय नमः ।

40. अनीश्वराय नमः ।

41. अजाय नमः ।

42. अघोराय नमः ।

43. अनादिनिधनाय नमः ।

44. अमरप्रभवे नमः ।

45. अग्राह्याय नमः ।

46. अक्रूराय नमः ।

47. अनुत्तमाय नमः ।

48. अरूपाय नमः ।

49. अह्ने नमः ।

50. अमोघादिपतये नमः ।

51. जयाय नमः ।

52. अक्षमाय नमः ।

53. अमृताय नमः ।

54. अमोघवीर्याय नमः ।

55. अव्यंगाय नमः ।

56. अविघ्नाय नमः ।

57. अतींद्रियाय नमः ।

58. अतितेजसे नमः ।

59. अमितविक्रमाय नमः ।

60. अष्टमूर्तये नमः ।

61. अनिलाय नमः ।

62. अवशाय नमः ।

63. अणोरणीयसे नमः ।

64. अशोकाय नमः ।

65. अरविन्दाय नमः ।

66. अधिष्ठानाय नमः ।

67. अमितनयनाय नमः ।

68. अरण्यवासिने नमः ।

69. अप्रमत्ताय नमः ।

70. अनन्तरूपाय नमः ।

71. अनलाय नमः ।

72. अमिषाय नम: ।

73. अस्त्ररूपाय नम: ।

74. अग्रगण्याय नम: ।

75. अपनेयाय नम: ।

76. अन्तकाय नम: ।

77. अचिन्त्याय नम: ।

78. अपांनिधये नम: ।

79. अरविन्दाये नम: ।

80. अमरप्रियाय नम: ।

81. अष्टसिद्धिदाय नम: ।

82. अरविंदाय नम: ।

83. अनघाय नम: ।

84. अर्थाय नम: ।

85. अक्षोभ्याय नम: ।

86. अर्चिष्मते नम: ।

87. अनेकमूर्तये नम: ।

88. अनन्तब्रह्माण्दपतये नम: ।

89. ब्रह्माण्डनायकाय नम: ।

90. अनन्तशयनाय नम: ।

91. अमराधिपतये नम: ।

92. अनाधाराय नम: ।

93. अनन्तनाम्ने नम: ।

94. अनन्तश्रिये नम: ।

95. श्रीपतये नम: ।

96. अक्सराय नम: ।

97. आश्रमस्थाय नम: ।

98. आश्रमानीताय नम: ।

99. अन्नदाय नम: ।

100. आत्मयोनये नम: ।

101. अग्निपतये नम: ।

102. अवनिधराय नम: ।

103. अनादिने नम: ।

104. आदित्याय नम: ।

105. अमृताय नम: ।

106. अपवर्गप्रदाय नम: ।

107. अव्यक्ताय नम: ।

108. व्यक्ताय नम: ।

धूप-

धूप समर्पित करें -

दशांगं गुग्गुलोद्भूतं चन्दनागरुसंयुतम्।
सर्वेषामुत्तमं धूपं गृहाण सुरपूजित ॥

दीपक -

शुद्ध घी का दीपक जलाकर श्रीहरि को दीप दिखायें ।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

नैवद्य-

नैवैद्य समर्पित करें -

अन्नं चतुर्विधं स्वादुपयोदधिघृतैर्युतम्।
नानाव्यञ्जनशोभाढ़यं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

आचमन -

आचमन के लिये तीन बार जल समर्पित करें ।

उत्तरापोशनार्थं ते दधि तोयं सुवासितम्।
गृहाण सुमुखो भूत्वा अनन्ताय नमो नमः॥

चंदन-

हाथों के लिये सुगंधित चंदन समर्पित करें ।

करोद्वर्तनकं देव मया दत्तं हि भक्तितः।
चारुचन्द्रप्रभं दिव्यं गृहाण जगदीश्वर्॥

फल :-

जो भी फल उपलब्ध हों वह समर्पित करें ।:-

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भज्जन्मनि जन्मनि॥

पूंगीफल- ताम्बूल-:-

पान के पत्ते को उलट कर उस पर सुपारी,लौंग,ईलायची तथा कुछ मीठा रखकर ताम्बूल बनायें और मुखशुद्धि के लिये ताम्बूल समर्पित करें ।

पूगीफलं मद्दीव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

द्रव्य-दक्षिणा-:-

सामर्थ्यानुसार दक्षिणा समर्पित करें -

हिरण्यगर्भगर्भस्यं हेमबीजं विभावसो:।

अनन्तपुण्यफलदमत: शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

कथा -

अनंत व्रत कथा सुने अथवा सुनायें ।

आरती-

कपूर जला कर भगवान श्रीअनंत जी की आरती करें –

श्री जगदीश्वरजी की आरती

|| ॐ जय जगदीश हरे ||

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे

भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे ||

जो ध्यावे फल पावे, दुख विनसे मन का स्वामी दुख विनसेमन का

सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ||

|| ॐ जय जगदीश हरे ||

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी स्वामी शरण गहूं मैं किसकी

तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं जिसकी ||

|| ॐ जय जगदीश हरे ||

तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतर्यामी स्वामी तुम अंतर्यामी

पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ||

|| ॐ जय जगदीश हरे ||

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता स्वामी तुम पालन कर्ता

मैं मूरख खल कामी ,कृपा करो भर्ता ||

|| ॐ जय जगदीश हरे ||

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति, स्वामी सबके प्राणपति,

किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति ||

|| ॐ जय जगदीश हरे ||

दीनबंधु दुखहर्ता, ठाकुर तुम मेरे, स्वामी ठाकुर तुम मेरे

अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ||

|| ॐ जय जगदीश हरे ||

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा, स्वमी पाप हरो देवा,

श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ||

|| ॐ जय जगदीश हरे ||

श्री जगदीशजी की आरती, जो कोई नर गावे,स्वामी जो कोई नर गावे।

कहत शिवानन्द स्वामी, सुख संपत्ति पावे ||

|| ॐ जय जगदीश हरे ||

प्रदक्षिणा :-

दोनों हाथ जोड़ कर प्रदक्षिणा करें -

यानि कानि च पापानि ज्ञाता- ऽज्ञात- कृतानि च ।

तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे ॥

पुष्पांजलि:-

हाथ में फूल लेकर पुष्पांजलि समर्पित करें :-

नमस्ते भगवन् भूयो नमस्ते गरुड़ध्वज! ।

नमस्ते कमलाकान्त अनन्ताय नमो नम: ॥

दोरक(अनंत सूत्र) प्रार्थना:-

दोनों हाथ जोड़कर अनन्त सूत्र के लिये दोरक(अनंत सूत्र) प्रार्थना करें:-

अनन्ताय नमस्तुभ्यं सहस्त्रशिरसे नम:।

नमोऽस्तु पद्मनाभाय नागानां पतये नम: ॥

दोरक(अनंत सूत्र) ग्रहण:-

सभी उपस्थित जन दोरक ग्रहण करें

अनन्तकामद: कामाननन्तो मे प्रयच्छतु ।

अनन्तदोररूपेण पुत्रपौत्राभिवर्धतु॥

दोरक(अनंत सूत्र) बाँधें:-

मंत्र के द्वारा अपने –अपने बाजू पर दोरक(अनंत सूत्र) बाँधे –

अनन्त संसारमहासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव ।

अनन्तरूपं विनियोजयस्व अनन्तसूत्राय नमो नमस्ते॥

पुराना दोरक(अनंत सूत्र) विसर्जन मंत्र :-

पुराने दोरक(अनंत सूत्र) को विसर्जित करें

नमः सर्वहितार्थाय जगदानन्दकारकः ।

जीर्णदोरकममुं देवं विसृजेऽहं त्वदाज्ञया॥

वायनदान मंत्र-:-

सामर्थ्यानुसार उपस्थित जन दक्षिणा ,फल तथा मालपुए समर्पित करें।

गृहाणेदं द्वीजश्रेष्ठ वायनं दक्षिणायुतम्।

त्वत्प्रसादादहं देवं मुच्येयं कर्मबन्धनात्।।

प्रतिगृह्णद्वीजश्रेष्ठ अनन्तफलदायक ।

पक्वान्नफलसंयुक्तं दक्षिणाघृतसंयुक्तम्।

वायनं द्विजवर्याय दास्यामि व्रतपूर्तये॥

पुराना दोरक(अनंत सूत्र) दान मंत्र-:-

पुराने दोरक (अनंत सूत्र) को दान करें ।

अनन्तः प्रतिगृह्णाति अनन्तो वै ददाति च ।

अनन्तस्तारकोभाभ्यामनन्ताय नमो नमः॥

इसके बाद यथा शक्ति ब्राह्मणोंको भोजन करावें।

"अनेन कृतपूजनेन श्रीअनन्तदेवः प्रीयताम्"

कहकर पूजन कर्म अर्पण करे ।

॥इति श्री अनंत -पूजनविधानम्॥

Sudhanshu Panday